❁ 28 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] बाप सिर्फ इशारा देते हैं कि तुम बहुत उत्तम शिवालय सतयुग के निवासी थे फिर जन्म लेते-लेते आधा में तुम विकार में गिरे तो पतित विशश बनें। आधाकल्प विशश रहे, अब फिर तुमको वाइसलेस सतोप्रधान बनना है। दो अक्षर याद करना है। अभी यह है तमोप्रधान दुनिया। सतोप्रधान दुनिया की निशानी यह लक्ष्मी-नारायण हैं, 5 हजार वर्ष की बात है। सतोप्रधान भारत में राज्य था। भारत बहुत उत्तम था, अभी कनिष्ट है। वाइसलेस से विशश बननें में तुमको 84 जन्म लगे। भल वहाँ भी थोड़ी-थोड़ी कला कमती होती जाती हैं। परन्तु कहेंगे तो सम्पूर्ण निर्विकारी ना। एकदम सम्पूर्ण निर्विकारी श्रीकृष्ण को कहेंगे। वह गोरा था, अब सांवरा बन गया है। तुम यहाँ बैठे हो तो बुद्धि में रहना चाहिए कि हम शिवालय में विश्व के मालिक थे। दूसरा कोई धर्म ही नहीं, सिर्फ हमारा ही राज्य था फिर 2 कला कम हुई। ज़रा-ज़रा कला कम होते, त्रेता में 2 कला कम हो गई। पीछे विशश बनते हैं और गिरते-गिरते छी-छी बन जाते हैं। इसको कहा जाता है विशश वर्ल्ड। विषय वैतरणी नदी में गोते खाते रहते हैं। वहाँ क्षीरसागर में रहते थे। तुम सारे वर्ल्ड की डिस्ट्री-जॉग्राफी को, अपने 84 जन्मों की कहानी को भी समझ गये हो। हम वाइसलेस थे, इनके राज्य में थे, पवित्र राजाई थी, उसको कहेंगे फुल स्वर्ग, फिर त्रेता में सेमी स्वर्ग। यह बुद्धि में तो है ना। बाप ही आकर सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का राज़ समझाते हैं। मध्य में ही रावण आया है, फिर अन्त का राज़ समझाते है। मध्य में ही रावण आया है, फिर अन्त में इस विशश दुनिया का विनाश होगा।

2] अब बाप कहते हैं आत्मा को पवित्र बनना है, उसके लिए मेहनत करनी पड़े। माया के तूफान ऐसे जबरदस्त आते हैं जो ज्ञान एकदम उड़ जाता है। किसको बोल भी न सकें। पहला काम विकार ही बहुत तंग करता है। उसमें ही टाइम लगता है। है तो एक सेकण्ड में जीवन मुक्ति की बात।

3] अभी है कलियुग। तो पुनर्जन्म भी कलियुग में ही लेंगे। जाना तो सबको जरूर है परन्तु पतित आत्मायें तो जा न सकें। अभी तुम बच्चे पावन बनते हो– योगबल से। पावन दुनिया गॉड फादर ही स्थापन करते हैं। फिर रावण हेल बनाते हैं। यह तो प्रत्यक्ष है ना।

4] सन्यासी लोग कहते शादी की और पवित्र रहे यह तो इम्पॉसिबुल है। बाप कहते हैं पॉसिबुल है क्योंकि प्राप्ति बहुत है। यह अन्तिम एक जन्म तुम पवित्र बनेंगे तो तुमको स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। क्या इतनी बड़ी प्राप्ति के लिए तुम एक जन्म पवित्र नहीं रह सकते हो? कहते हैं बाबा हम जरूर रहेंगे। सिक्ख लोग भी पवित्रता का कंगन डालते हैं। यहाँ कोई धागा आदि बांधने की दरकार नहीं। यह तो बुद्धि की बात है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो।

5] कोई भी छोटी सी व्यर्थ बात, व्यर्थ वातावरण वा व्यर्थ दृश्ट का प्रभाव पहले मन पर पड़ता है फिर बुद्धि उसको सहगयो देती है। मन और बुद्धि अगर उसी प्रकार चलती रहती है तो संस्कार बन जाता है। फिर भिन्न-भिन्न संस्कार दिखाई देते हैं, जो ब्राह्मण संस्कार नहीं है। किसी भी व्यर्थ संस्कार के वश होना, अपने से ही युद्ध करना, घड़ी-घड़ी खुशी गुम हो जाना- यह क्षत्रियपन के संस्कार है। ब्राह्मण अर्थात् स्वराज्य अधिकारी वे व्यर्थ संस्कारों से मुक्त होंगे, परवश नहीं।

✺ योग-

1] अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। अपने को देह नहीं समझो।

2] ड्रामा अनुसार तुम मेहनत करते रहते हो। जितना-जितना बाप को याद करेंगे, याद से ही पाप कटेंगे। पतित-पावन बाप ही युक्ता बता रहे हैं।

...2

❁ 28 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

[2]

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– ज्ञान की धारणा करते रहो तो अन्त में तुम बाप समान बन जायेंगे, बाप की सारी ताकत तुम हज़म कर लेंगे।

2] तो बाप कितना सहज करके छोटे-छोटे बच्चों को जैसे बैठ समझाते हैं, भल बाहर में कहाँ भी रहते तुम पद पा सकते हो, इसमें पवित्रता तो पहले मुख्य है। खान-पान शुद्ध हो।

3] खुद कहते हैं मैं तुम्हारा स्प्रीच्युअल फादर हूँ। ज्ञान का सागर हूँ। तुम बच्चे भी बाप से सीख रहे हो। ज्ञान को धार कर रहे हो। फिर पिछाडी में बाप मिसल बन जायेंगे। सारा मदार धारणा पर है। फिर वह ताकत आ जायेगी, बाप की याद से।

✺ सेवा-

1] बाप कहते हैं पहले उनको अच्छी रीति से समझाओ– यह सब प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद हैं। शिवबाबा से वर्सा मिल रहा है। पतित से पावन बनना है। अब बाप कहते हैं मामेकम् याद करो, ऐसा तो कोई कह न सकें। पहले तो उनकी बुद्धि में बिठाना है भारत वाइसलेस था, अभी विशश है फिर वाइसलेस कैसे बनेगा? भगवानुवाचन मामेकम् याद करो। बस इतना कहे तो भी अहो भाग्य, परन्तु इतना भी कह नहीं सकेंगे। भूल जायेंगे। बाबा ने समझाया था उद्घाटन तो बाप ने कर दिया है। बाकी तुम निमित्त कर रहे हो। फाउन्डेशन लगा दिया है, बाकी अब सर्विस स्टेशन का उद्घाटन होता है। यह तो गीता की ही बात है, गीता में भी है– हे बच्चों, तुम काम पर जीत पहनो तो ऐसे जगतजीत बनेंगे, 21 जन्मों के लिए। भल खुद न बनें, औरों को तो समझायें। ऐसे भी बहुत हैं, औरों को उठाकर खुद गिर पड़ते हैं। काम महाशत्रु है, एकदम गटर में गिरा देता है। जो बच्चे काम पर जीत पाते हैं वही जगतजीत बनते हैं। अच्छा !